Course code	Prakrit Inscriptions, Manuscriptology and Scripts, Paper –VII	L	T	P	C
MJAPR20Y201	प्राकृत शिलालेख, पाण्डुलिपि विज्ञान और लिपियाँ, प्रश्न–पत्र – 7	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- अभिलेखों की व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- ऐतिहासिक तथ्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- सम्पादन की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- लिपियों के पठन–पाठन में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- प्राकृत भाषा की ऐतिहासिक विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा की पाण्डुलिपियों की वैशिष्ट्य का पता चलना।
- ग्रन्थ सम्पादन में पाठ निर्धारण की पद्धति ज्ञान होना।
- सम्पादन की पद्धतियों का अभिज्ञान और अभ्यास होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- भाषा और लिपि के पठन कौशल का विकास होना।
- पाण्डुलिपियों के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- सम्पादन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- विरासत के इतिहास के प्रति जागरूक होना।

Unit-1 — **18**

प्राकृत के प्रमुख शिलालेख–

- सम्राट् खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख।
- सम्राट् अशोक के गिरनार शिलालेख।
- हाथीगुम्फा अभिलेख का भाषागत परिचय।
- गिरनार शिलालेख भाषागत परिचय।
- शिलालेख में प्रयुक्त लिपियाँ।

Unit-2 — **16**

पाण्डुलिपियाँ–

- पाण्डुलिपि विज्ञान का परिचय।
- पाण्डुलिपियों का महत्व।
- पाण्डुलिपियों का संरक्षण।
- पाण्डुलिपि ग्रंथ रचना प्रक्रिया।

- पाण्डुलिपियों के पाठ।
- पाठविकृति एवं उसके कारण।

Unit-3	20

सम्पादन पद्धति–

- संपादन प्रक्रिया।
- काल – निर्धारण।
- शब्द और अर्थ की समस्या।
- पाठालोचन।
- पाण्डुलिपि संबंधी पारिभाषिक शब्दावली।

Unit-4	19

पाण्डुलिपियों की राष्ट्रीय व्यवस्था–

- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन।
- उद्देश्य
- परियोजना।
- कार्य – सम्पादन, सूचीकरण, प्रकाशन।
- आधुनिक पाण्डुलिपि संग्रहालय।

Unit-5	17

प्रमुख लिपियाँ–

- लिपि–परिचय।
- लिपि का उद्भव और विकास।
- मुख्य लिपियों का परिचय।
- लिपियों का इतिहास।
- ब्राह्मी, खरोष्ठी, शारदा, ग्रंथ, नेवारी, देवनागरी परिचय।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/ Reference Books

1. अशोक के अभिलेख : डॉ. राजबली पाण्डेय, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
2. पाण्डुलिपि विज्ञान– डॉ.सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. पाण्डुलिपि परिचय – अयोध्या चन्द्र दास. चन्द एण्ड कंपनी लि. रामनगर, नई दिल्ली।
4. पाण्डुलिपि विज्ञान – रामगोपाल शर्मा दिनेश।
5. शोधप्रविवि तथा पाण्डुलिपि विज्ञान– प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
6. पाण्डुलिपि : सूचीकरण एवं सम्पादन – डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज', प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, (विहार)।
7. पाठालोचन : सिद्धान्त और प्रकिया – मिथिलेश कत्रे
8. पाठानुसंधान – डॉ .सियाराम तिवारी।
9. भारतीय पाठालोचन की भूमिका – डॉ.एस.एम. कत्रे।
10. प्राचीन लिपिमाला – डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा।
11. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
12. ब्राह्मी लिपि प्रवेशिका – रवीन्द्र कुमार वशिष्ठ, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली।
13. शारदा लिपि दीपिका – डॉ. श्रीनाथ तिक्कू, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
14. ब्राह्मी लिपि चंद्रिका – डॉ. महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2019।

Ashishray

Course code	Prakrit Drama and Sattak Literature, Paper – VIII	L	T	P	C
MJAPR20Y202	प्राकृत नाटक और सट्टक साहित्य, प्रश्न–पत्र – 8	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives :

- नाट्यशास्त्र की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- नाटकों की प्राकृत के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- मंचन कला की कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome :

- प्राकृत भाषा नाट्य–सम्बन्धी क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा में संवाद लेखन की दक्षता और सूक्ष्मता का पता चलना।
- सट्टक की विशेषताओं का परिचय कराना।
- क्षेत्रीय भाषाओं की प्रवृत्तियों का अभिज्ञान होना।

Student Learning Outcomes (SLO) :

- मंचन कला में कौशल का विकास होना।
- मंच के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- मंचन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- नाटक सम्बन्धी समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-1 — **18**

संस्कृत नाटकों में उपलब्ध प्राकृतों का भाषागत परिचय–

- मागधी प्राकृत।
- शौरसेनी प्राकृत।
- महाराष्ट्री प्राकृत।
- अर्धमागधी प्राकृत।
- अवन्तिका प्राकृत।
- प्राच्या प्राकृत।

Unit-2 — **16**

नाटककारों और उनकी प्रमुख कृतियों का परिचय–

- महाकवि अश्वघोष – शारिपुत्रप्रकरणम्।
- महाकवि भास – स्वप्नवासवदत्तम्।
- महाकवि कालिदास – अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
- कवि शूद्रक – मृच्छकटिकम्।

- कवि विशाखदत्त – मुद्राराक्षसम्।

Unit-3	20

मूल नाटक–

- मृच्छकटिकम् अंक–1, 2 व 3 (केवल प्राकृत अंश)।

Unit-4	19

सट्टक साहित्य तथा कर्पूरमंजरी सट्टक–

- सट्टक साहित्य का उद्भव एवं विकास।
- कर्पूरमंजरी सट्टक की विषय वस्तु।
- महाकवि राजशेखर का परिचय।
- कर्पूरमंजरी का भाषागत अध्ययन।
- कर्पूरमंजरी जवनिका – 1 और 2 का पद्य भाग मात्र।

Unit-5	17

सट्टक साहित्य तथा रंभामंजरी सट्टक–

- रंभामंजरी का परिचय।
- सट्टक साहित्य में रंभामंजरी का स्थान।
- ग्रन्थकार नयनन्दि का परिचय।
- रंभामंजरी की विषय वस्तु।
- रंभामंजरी – जवनिका – 1–2 मूलमात्र।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text/ Reference Books			

1. मृच्छकटिकम्– रमाशंकर त्रिपाठी, हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या सहित, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1969
2. कर्पूरमंजरी– श्री रामकुमार आचार्य, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 2012
3. इन्ट्रोडक्सन टू कर्पूरमंजरी : डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (विहार)
4. प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमलचन्द्र जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
7. रंभामंजरी –डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार)

Course code	Modern Prakrit Literature, Paper – IX	L	T	P	C
MJAPR20Y203	आधुनिक प्राकृत साहित्य, प्रश्न–पत्र – 9	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- आधुनिक रचनाकारों की समग्र और व्यापक जानकारी कराना।
- प्राकृत काव्य रचना के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- प्राकृत भाषा में लेखन कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- प्राकृत भाषा की विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा में संभाषण दक्षता का विकास होना।
- समकालीन रचनाओं का सम्यक् ज्ञान होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- प्राकृत भाषा में रचना कौशल का विकास होना।
- आधुनिक विषयों में लेखन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा सम्बन्धी समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- प्राकृत के पारम्परिक ज्ञान का आधुनिक सन्दर्भ में अभ्यास कराना।

Unit-1 — **18**

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज एवं उनके द्वारा लिखित प्राकृत साहित्य –

- भावणासारो
- वयणसारो
- सम्मदी–सदी
- णियप्पज्झाणसारो
- भावालोयणा
- थुदि संगहो
- अज्झप्पसारो

Unit-2 — **16**

आचार्य वसुनन्दी जी महाराज एवं उनके द्वारा लिखित प्राकृत साहित्य –

- णंदिणंद सुत्तं, रट्ठ–संति–महाजण्णो
- अज्ज–सक्किदी, जदि–किदिकम्मं

- धम्मसुत्तं, अहिंसगाहारो
- जिणवरथोत्तं, तच्च–सारो।
- विज्जावसु–सावयायारो।

Unit-3	20

मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज एवं उनके द्वारा लिखित प्राकृत साहित्य –

- तित्थयरभावणा
- धम्मकहा
- दार्शनिक प्रतिक्रमण
- लिंगपाहुड (नंदिनी टीका)।

Unit-4	19

मुनि आदित्यसागर जी महाराज एवं उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ –

- आचार्य विशुद्धसागरजी द्वारा कृत इष्टोपदेश भाष्य
- समाधितंत्र–अनुशीलन
- स्वानुभव–तरंगिणी ग्रन्थों का प्राकृत भाषानुवाद।
- देशना बिन्दु, देशना संचय
- तत्त्वबोध, बोध वाक्यामृत
- दिव्य–वयणं, तत्त्व–तरंगिणी का परिचय।

Unit-5	17

आचार्य चन्दन मुनि और मुनि विमलकुमार एवं उनका प्राकृत साहित्य –

- रयणवालकहा
- पाइयपच्चूसो, पियंकरकहा
- पाइयपडिबिंबो, अंसु–मुत्ता
- थूलिभद्दो पाइयसंगहो आदि ग्रन्थों का परिचय।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/ Reference Books

1. सुनील प्राकृत समग्र : रचनाकार आचार्य सुनीलसागर जी महाराज, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, संस्करण : 2016
2. तित्थयर भावणा : रचनाकार मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज, सम्पादक : प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)
3. बीसवीं शताब्दी से रचित प्राकृत वाङ्मय का दार्शनिक अनुशीलन (शोध प्रबन्ध) : डॉ. आशीष कुमार जैन, बम्हौरी।
4. अंसु–मुत्ता और थूलिभद्दो, रचनाकार मुनि विमलकुमार, प्रकाशन : जैन विश्व भारती लाडनूँ, संस्करण : 2015
5. इट्ठोवएस–भासो, अनुवादक : मुनि आदित्यसागर जी महाराज, प्रकाशन : श्रमण संस्कृति सेवा संघ, इन्दौर, संस्करण : 2016
6. आचार्य सुनीलसागर जी महाराज एवं उनकी प्राकृत कृतियों का परिचय : डॉ. आशीषकुमार जैन, आचार्य आदिसागर अंकलीकर, अन्तर्राष्ट्रीय मंच मुंबई, 2019।

Ashutosh

आशीष जैन

Course code	Acharya Kundakund and This Literature (Elective), Paper – X	L	T	P	C
MJAPR20Y204	आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य (ऐच्छिक पत्र), प्रश्न–पत्र – 10	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

1. आचार्य कुन्दकुन्द के योगदान की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
2. प्राकृत भाषा के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
3. भाषा के इतिहास के अध्ययन की प्रवृत्ति को विकसित करना।
4. दार्शनिक विषयों के अध्ययन में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

1. प्राकृत भाषा की क्षमताओं एवं महत्त्व का अभिज्ञान होना।
2. प्राकृत भाषा के पारम्परिक ज्ञान की सूक्ष्मता का पता चलना।
3. जैन परम्परा के ग्रन्थों के गूढ़ ज्ञान का अभ्यास होना।
4. कुन्दकुन्द की दृष्टि का ज्ञान होना।
5. समकालीन ज्ञान–विज्ञान में प्राचीन ज्ञान का उपयोग होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
2. ज्ञान के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
3. भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
4. भाषागत प्रयोगों और समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-1 — **18**

जैन आचार्य परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्द का स्थान।

- शिलालेखों में आचार्य कुन्दकुन्द।
- आचार्य कुन्दकुन्द के पांच नाम।
- आचार्य कुन्दकुन्द का समय।
- आचार्य कुन्दकुन्द विषयक कथायें।

Unit-2 — **16**

आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित ग्रन्थों का परिचय –

- प्रवचनसार
- समयसार
- नियमसार
- रयणसार
- अष्टप्राभृत
- वारस–अणुवेक्खा
- भक्ति संग्रह

20

आशीष जैन

Unit-3	
• **नियमसार**– (आचार्य कुन्दकुन्द), गाथा 1–70 तक।	
Unit-4	**19**
• **प्रवचनसार** – (आचार्य कुन्दकुन्द), ज्ञानाधिकार मात्र।	
Unit-5	**17**
आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा का व्याकरणात्मक प्रयोग – • स्वर प्रयोग • व्यंजन–प्रयोग • संयुक्त–व्यंजन प्रयोग • विभक्ति प्रयोग • सर्वनाम प्रयोग • क्रिया प्रयोग • प्रत्यय प्रयोग • अव्यय प्रयोग • संख्यात्मक।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		

Text/ Reference Books

1. नियमसार– आचार्य कुन्दकुन्द, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली, 1997
2. प्रवचनसार– आ. कुन्दकुन्द, श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, 1984
3. कुन्दकुन्दाचार्य की प्रमुख कृतियों में दार्शनिक दृष्टि, लेखक : डॉ. सुषमा गांग,प्रकाशन : भारतीय विद्याप्रकाशन, वाराणसी।
4. कुन्दकुन्द भारती, सम्पादक : डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य, प्रकाशक : श्रुत भण्डार व ग्रन्थ प्रकाशन समिति, फलटन, संस्करण 1970
5. कुन्दकुन्द प्राभृत संग्रह, प्रकाशन : जीवराज ग्रन्थमाला, सोलापुर (महा.), संस्करण : 1960।
6. नियमसार : आचार्य कुन्दकुन्द, सम्पादक : डॉ. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, (विहार), 2002
7. कुन्द–कुन्द शब्दकोश, लेखक : डॉ. उदयचन्द्र जैन उदयपुर, प्रकाशन : श्री दिगम्बर जैन साहित्य संरक्षण समिति, विवेकविहार, दिल्ली, संस्करण : वीर निर्वाण संवत् 2517 (1991 ई.)।
8. आचार्य कुन्दकुन्द अवदान : प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार), 2017।
9. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण : डॉ. उदयचन्द्र जैन।
10. प्राकृत बोध : आचार्य सुनीलसागर, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर।
11. भत्ति संगहो : आचार्य सुनीलसागर, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर।

Ashish Jain

Course code	Philosophical Literature of Acharya Haribhadra and Siddhasen, (Elective) Paper –X	L	T	P	C
MJAPR20Y205	आचार्य हरिभद्र एवं सिद्धसेन का दार्शनिक साहित्य (ऐच्छिक पत्र), प्रश्न–पत्र –10	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- दर्शनशास्त्र की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- प्राकृत साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत भाषा का आचार मार्ग का ज्ञान कराना।
- वैचारिक कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- प्राकृत भाषा की चिंतनपरक क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा की वैचारिक सूक्ष्मता का पता चलना।
- तर्क पद्धति का सम्यक् ज्ञान होना।
- तर्क–विश्लेषण की क्षमता का विकास होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- तार्किक कौशल का विकास होना।
- तार्किक अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- चिंतन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- तार्किक समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-1 — **18**

आचार्य हरिभद्रसूरि और उनकी कृतियाँ–

- जैन आचार्य परम्परा में आचार्य हरिभद्रसूरि का स्थान।
- आचार्य हरिभद्रसूरि द्वारा लिखित दार्शनिक ग्रन्थों का परिचय।
- आचार्य हरिभद्रसूरि द्वारा रचित कथा ग्रन्थों का परिचय।
- आचार्य हरिभद्रसूरि कृत याग विषयक ग्रन्थों की विषय वस्तु।
- आचार्य हरिभद्रसूरि कृत टीका ग्रन्थ।

Unit-2 — **16**

आचार्य सिद्धसेन एवं उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का परिचय –

- सन्मतिसूत्र
- द्वात्रिंशिकाएँ
- न्यायावतार

Unit-3 — **20**

- **सावयपण्णत्ति** (आचार्य हरिभद्रसूरि), श्रावक के व्रत मात्र।

Unit-4 — **19**

आशीष जैन

- **सन्मतिसूत्र** -- (आचार्य सिद्धसेन), नयकाण्ड मात्र।

Unit-5	**17**

आचार्य सिद्धसेन के ग्रन्थों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा का व्याकरणात्मक प्रयोग –

- स्वर प्रयोग
- व्यंजन–प्रयोग
- संयुक्त–व्यंजन प्रयोग
- विभक्ति प्रयोग
- सर्वनाम प्रयोग
- क्रिया प्रयोग
- प्रत्यय प्रयोग
- अव्यय प्रयोग

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text/ Reference Books			

1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 2014
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास– डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961
3. सावयपण्णत्ति : सम्पादक – पं. बालचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 1981
4. सन्मतिसूत्र – डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
5. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)
6. प्राकृत भाषा और साहित्य – प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार), 2017
7. हरिभद्र का अवदान : डॉ. सागरमल जैन, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।

Course code	Basic Principles of Jain Religion and Philosophy (Elective) Paper – X	L	T	P	C
MJAPR20Y206	जैन धर्म दर्शन के मूल सिद्धांत (ऐच्छिक पत्र), प्रश्न–पत्र – 10	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में चिंतन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- दार्शनिक विचारों के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- आचार में नैतिक कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- दर्शन की क्षमताओं एवं विशेषताओं का अभिज्ञान होना।
- तार्किक दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- सह–अस्तित्व के संरक्षण की भावना विकसित होना।
- जीवन को आदर्श बनाने का विचार विकसित होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- विषय के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- विचार की नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- जैन परम्परा के दैनन्दिन उपयोगी ज्ञान का अभ्यास कराना।

Unit-1 — **18**

जैनधर्म–

- जैन धर्म का सामान्य परिचय।
- जैन धर्म की परम्परा।
- जैन धर्म का स्वरूप।
- जैन धर्म का महत्त्व।
- जैन धर्म में कुलकर एवं तीर्थंकर

Unit-2 — **16**

जैन आचार–

- जैन धर्म की आचार परम्परा।
- अणुव्रत
- गुणव्रत
- शिक्षाव्रत
- महाव्रत

• श्रमण के मूलगुण।	
Unit-3	**20**
जैन तत्त्वमीमांसा– • पंचास्तिकाय • छह द्रव्य • सात तत्त्व • नव पदार्थ।	
Unit-4	**19**
जैनदर्शन की प्रमाण–व्यवस्था– • प्रमाण का स्वरूप एवं उसके भेद–प्रभेद। • पाँच ज्ञान और उसके भेद। • प्रत्यक्ष प्रमाण • परोक्ष प्रमाण • अनुमान प्रमाण • आगम प्रमाण	
Unit-5	**17**
अनेकान्त और स्याद्वाद– • अनेकांत – सम्यक् अनेकांत, मिथ्या अनेकांत। • स्याद्वाद • स्यात् निपात का अर्थ • सप्तभंगी नय। • आध्यात्मिक नय – निश्चय और व्यवहार।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text/ Reference Books		
	1. जैन धर्म – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, भा. दि. जैन संघ मथुरा, 2. जैनदर्शन – पं. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, गणेश वर्णी शोध संस्थान, नरिया, वाराणसी 3. जैन न्याय – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, 4. प्रमेयकमलमार्तण्ड परिशीलन – पं. उदयचन्द्र जैन सर्वदर्शनाचार्य 5. जैन न्याय के प्रमाण – डॉ. वशिष्ठ नारायण सिन्हा, सम्पादक प्रो. ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)। 6. दार्शनिक समन्वय की जैन दृष्टि : (नयवाद) – डॉ. अनेकांत कुमार जैन, सम्पादक प्रो. ऋषभ चन्द्र जैन, निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)।	

Course code	Dissertation/Project Work , Paper – XI	L	T	P	C
MJAPR20Y207	लघु शोध निबन्ध/परियोजना कार्य, प्रश्न पत्र – XI	4	0	6	10
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- दर्शनशास्त्र की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- प्राकृत साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत भाषा का आचार मार्ग का ज्ञान कराना।
- वैचारिक कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- प्राकृत भाषा की चिंतनपरक क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा की वैचारिक सूक्ष्मता का पता चलना।
- तर्क पद्धति का सम्यक् अभिज्ञान होना।
- तर्क विश्लेषण की क्षमता का विकास होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- तार्किक कौशल का विकास होना।
- तार्किक अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- चिंतन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- तार्किक समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

प्रत्येक विद्यार्थी को जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा के किसी एक शीर्षक पर 40 पृष्ठों का लघु शोध निबन्ध/परियोजना कार्य की प्रस्तुति अवश्यक होगी।

Ashishraj

आशीष जैन

Course code	Subjective Presentation & Comprehensive Viva, Paper – XII	L	T	P	C
MJAPR20Y208	विषय प्रस्तुति और विस्तृत मौखिकी, प्रश्न पत्र – 12	0	0	6	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

- प्राकृत विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में प्राकृत साहित्य सम्बन्धी शोध–खोज के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- प्राकृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- दर्शन के क्षेत्र में शोध करने हेतु कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।

Course Outcome:

- प्राकृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- दर्शन और जैन दर्शन में दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का पता चलना।
- भाषा और दर्शन में शोध के आयामों का ज्ञान कराना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- भाषा और वाक्–कौशल का विकास होना।
- विषय के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- शोध के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियाँ एवं प्रयोगों का विकास होना।
- शोध सम्बन्धी समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

प्रत्येक विद्यार्थी को प्रश्न पत्र संख्या 7 से 11 तक पढे गये विषयों में से किसी एक विषय पर विषय प्रस्तुति और विस्तृत मौखिकी देनी होगी।